विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नेट-ब्यूरो

Code No. : 65

विषयः कला मंच (Performing Arts)-नृत्य, नाटक, थिएटर

इकाई 1 से 5 नृत्य, नाटक और थिएटर के लिए साझा हैं।

इकाई-1 भारत का सांस्कृतिक इतिहास

- प्रागैतिहासिक काल से 1200 ईसा सन् तक भारत की संस्कृतियां।
- प्रागैतिहासिक काल से ईसा काल के आरम्भ तक कला का क्रमिक विकास जैसा कि गुफा चित्रकला और मूर्तिकला से प्रकट होता है।
- नृत्य और नाटक (नाट्य) का क्रमिक विकास, (A) नाट्य शास्त्र के अनुसार इन का दैवी उद्भव और (B) कला समाज की देन के रूप में, इसकी अनुष्ठान और आस्था पद्धति।
- वेद, प्रमुख महाकाव्य और पुराण, (रामायण, महाभारत, शिल्पदिकरम् और भागवत पुराण),नृत्य और थिएटर के संदर्भ में उनकी अन्तर्वस्तु, पात्र और प्रासंगिकता।
- भक्ति तथा अन्य धार्मिक आन्दोलन और उनका संस्कृति के विभिन्न प्रतिनिधि पक्षों पर प्रभाव विशेषतः नृत्य और थिएटर पर ध्यान को केंद्रित रखते हुए।

इकाई-2 भारत में लोक तथा पारंपरिक थिएटर का स्वरूप

- भारतीय नृत्य और नाटक के संदर्भ में जनजातीय, लोक, पारंपरिक और शास्त्रीय शब्दावली की समझ और परिभाषा तथा उनका परस्पर संबंध।
- भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित जनजातीय, लोक और पारंपरिक नृत्य और थिएटर के रूपों का परिचय।
- भारत के अन्य क्षेत्रों मे नाटक के रूपों यथा कुडिअट्टम, यक्षगण, भागवत मेला, तमाशा, रामलीला, रासलीला, भवाई, नौटंकी, जात्रा, छऊ, लाइहरोबा, तेरूकूनु, थैयम, अंकिया नट पंडवाणी, चिंदू भागवत, भांड जश्न तथा अन्य का परिचय।
- इन रूपों में प्रयोग किये जाने वाले संगीतसाजों और वेश भूषा के प्रति जागरूकता।

इकाई-3 नाट्य शास्त्र

- नाट्य शास्त्र का ज्ञान और नाट्य तथा नृत्य की संकल्पना का बोध।
- एकादश संग्रह के ग्यारह पक्षों यथा अभिनय, धर्मी, वृति, प्रवृति, आत्योदय और सामान्य और चित्र अभिनयों से संबंधित अध्यायों का अध्ययन और उनका वर्गीकरण।
- दशरूपक।
- नाट्य गृह और रंगमंच – संरचना, प्रकार और विभिन्न तत्त्व।
- पूर्वरंग विधि और अन्य मंच परंपरायें यथा कक्ष विभाग इत्यादि।

इकाई-4 कला और सौंदर्य

- भरत का रससूत्र।
- भट्ट लोलट, श्री शंकुक, भट्ट नायक और अभिनव गुप्त जैसे व्याख्याकारों द्वारा रस सिद्धांत का विस्तार।
- रस और इसके मूल तत्त्व यथा स्थायी, संचारी और सात्विक भाव और उनके तदनुरूप विभाव और अनुभाव।
- कला की परिभाषा, प्रयोजन और तत्त्व।
- प्रदर्शन (Performance) अध्ययन और कला के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का परिचय : विभिन्न पाश्चात्य दार्शनिकों द्वारा प्रतिपादित अनुकरण / विरेचन, के रूप में, कल्पना के रूप में, सौदंर्य के रूप में, संप्रेषण के रूप में और उपयोगिता के रूप में कला का परिचय।

इकाई-5 पूर्वी और दक्षिणी एशियाई देशों के नृत्य और थिएटर

- पूर्वी एशियाई (चीन, जापान और कोरिया), दक्षिण एशियाई (बंग्लादेश, पाकिस्तान और श्री लंका) और दक्षिण-पूर्व एशियाई (इंडोनेशिया, थाइलैंड, वियतनाम, कम्बोडिया, म्यांमार, फिलिपाइन्स और लओस) देशों के नृत्य और थिएटर के रूपों की समझ।
- उपर्युक्त देशों के विभिन्न प्रचलित थिएटर और नृत्य के रूपों का इतिहास और प्रस्तुतिकरण तकनीक।

<u>नृत्य</u>

इकाई-6 संस्कृति साहित्य में नृत्य और ग्रंथ

- कालिदास, भास, सूद्रक तथा अन्य की रचनाओं में नृत्य संबंधी संदर्भों का संक्षिप्त अध्ययन।
- प्राचीन एवं मध्यकाल की नृत्य से संबंधित ग्रंथों की अवधारणाओं का सामान्य बोध – नाट्य शास्त्र, अभिनय-दर्पण, संगीत रत्नाकर, नृत्य रत्नावली और नृत्य निर्णय। इन अवधारणाओं में नाट्य, नृत्य, लास्य, तांडव, मार्ग, देसी, बद्ध, अनिबद्ध, नर्तकी लक्षण, सभा लक्षण और इसके समरूप सम्मिलित हैं। पादों, हस्तों, चारी, मंड़लों, करणों और अंग, उपंग और प्रत्यंग गतियों का विशिष्ट अध्ययन।
- अभिनय दर्पण के विस्तृत अध्ययन के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों / रूपों की प्रस्तावना के रूप में हस्त लक्षण दीपिका, बलराम भारतम्, अभिनय चंद्रिका, श्री हस्तमुक्तावली तथा अन्य विशिष्ट ग्रंथों का परिचय।
- भरत के नाट्य शास्त्र, शारदा तनया के भाव प्रकाशन्, भानु दत्त की रस मंजरी और अकबर शाह की श्रृंगार मंजरी के अनुसार नायक और नायिकाओं के भेद और प्ररूप।

इकाई-7 भारत के शास्त्रीय नृत्य

- भारतीय शास्त्रीय नृत्य का उद्भव और इतिहास।
- भरत नाट्यम्, कत्थक, कथाकलि, कुचीपूडी, मणिपुरी, मोहिनीअट्टम, ओडीसी और सत्रिय का क्रमिक विकास, तकनीक सत्रिय, वेशभूषा, संगीत, गुरू और अग्रदूत।
- हिन्दुस्तानी और कर्नाटक संगीत परंपरा में प्रमुख तालों की सामान्य समझ।

- स्वरकार / वागेयकार और उनकी रचनाएँ, जिनमें जयदेव, नारायण तीर्थ, सूरदास, मीराबाई, तुलसीदास, बणमाली दास, क्षेत्रय्य, श्रीमंत शंकरदेव, गोविन्द दास, विद्यापति तथा अन्य सम्मिलित, का संक्षिप्त अध्ययन।
- शास्त्रीय नृत्य के पुनः प्रवर्त्तन और पुनरूत्थान में रवीन्द्र नाथ टैगोर, रूक्मणि देवी अरूंदेल, वल्लथोल नारायण मेनन, मैडम मेनका की भूमिका का अध्ययन।

इकाई-8 स्वतंत्र भारत में भारतीय शास्त्रीय नृत्य

- भारत के प्रमुख गुरूओं, अभिनयकर्ताओं के जीवन और कार्य तथा महत्त्वपूर्ण संस्थाओं पर एक विहंगम दृष्टि।
- नृत्य का संस्थायीकरण और तदनुरूप इसका (पेडागाजी), रूप, प्रदर्शनांश इत्यादि पर इसका प्रभाव।
- भारतीय नृत्य में नई लहर – उदय शंकर और राम गोपाल के कार्यों तथा बाद के समकालीन कलाकारों और उनके कार्यो के माध्यम से इसका विकास (अर्थात शांतिवर्धन, नरेंद्र शर्मा, सचिन शंकर, मृणालिनी साराभाई, माया राव, कुमुदिनी लाखिया, मंजुश्री चाकी सरकार, चंद्रलेखा, अस्तद देबू और अन्य))।
- प्रवासी भारतीयों में प्रचलित भारतीय शास्त्रीय नृत्य।
- नृत्य पृष्ठ पोषक – सरकारी और निजी निकायों की भूमिका।
- महत्वपूर्ण नृत्य उत्सव, पुरस्कृत कलाकारों और नृत्य से संबंधित बर्तमान की घटनाएं।

इकाई-9 नृत्य शिक्षण, शिक्षाशास्त्र (पेडागाजी) और शोध

- नृत्य, स्कूली शिक्षा से विश्वविद्यालयी व्यवस्था में पाठ्यक्रम के रूप में।
- पेशी गति विज्ञान (कैनेस्थिटिक्स) और लाबान प्रणाली के आधार पर गति विश्लेषण।
- सुप्रसिद्ध विद्वान और उनका कार्य, जिन्होंने भारतीय नृत्य के ज्ञान में योगदान दिया।
- 1930 के दशक से आज तक भारत में नृत्य के शिक्षण और शोध में बनाये गए मुख्यमार्ग जिनमें नृत्य के अनुप्रयुक्त क्षेत्र, प्रति-सांस्कृतिक शिक्षण तथा इसके समरूप आते हैं। शोध और विद्वता की प्रवृत्तियां।

इकाई-10 अंतरराष्ट्रीय नृत्य और संव्यवहार

- शास्त्रीय बैले का यूरोप, रूस और अमेरिका में इतिहास और विकास।
- पश्चिम में आधुनिक नृत्य का अभ्युदय और उससे संबंधित प्रमुख व्यक्तित्व।
- प्रस्तुति के रूपांकन (डिजाइन) की दृष्टि से भारतीय नृत्य पर पश्चिम का प्रभाव।

<u>नाटक और थिएटर</u>

इकाई 6 नाटक और इसके सिद्धान्त : भारतीय तथा पाश्चात्य

- नाटक की संकल्पना – भारतीय और पाश्चात्य।
- भारतीय तथा पाश्चात्य नाटक कला के अनुसार नाटक के तत्त्व (एलिमेंट)और संरचना
- पाश्चात्य नाटकों के विभिन्न वर्गीकृत रूपों का अध्ययन – त्रासदी, कामदी – त्रासद-कामदी मेलो ड्रामा और फार्स।
- नाटक से संबंधित विभिन्न 'वादों' यथा यथार्थवाद, प्रकृतिवाद, प्रतीकवाद, अभिव्यक्तिवाद, अपार्थ नाटक और महाकाव्य का अध्ययन।
- नाटककार और उनका योगदान : संस्कृत – कालिदास, भास, सूद्रक, भवभूति, विशाखादत्त, भट्ट नारायण;

  प्राचीन ग्रीक और रोमन – एस्काइल्स, सोफोक्लीज, यूरिपिडिस, असिटोफेन्स, सेनेका।

  पाश्चात्य – शेक्सपियर, मोलियर, इब्सन, ब्रेकट, पिरानडेलो, मिल्लर, चेखव, बेकेट, ऐनेस्को।

इकाई 7 आधुनिक भारतीय थिएटर

- आधुनिक भारतीय थिएटर का उद्भव और विकास। क्षेत्र, राज्य और थिएटर से संबंधित व्यक्तित्वों के संदर्भ में।
- राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तरों पर स्वतन्त्रता आन्दोलन तक थिएटर में आई नई प्रवृतियां, उदाहरणार्थ इप्टा (IPTA) आन्दोलन, नवनाट्य आन्दोलन, रूट थिएटर आंदोलन, थर्ड थिएटर, वैकल्पिक थिएटर, स्ट्रीट थिएटर, थिएटर ऑफ दि ओप्रेसड़, अपलाइड थिएटर फोरम थिएटर, स्थल विशिष्ट थिएटर।
- विभिन्न क्षेत्रों के प्रमुख नाटककार और निर्देशक तथा योगदान देने वाले व्यक्ति जिनके नाटक राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक रूप प्रस्तुत हो चुके है।
- लोकप्रिय नाटक गृह, थिएटर कंपनियां, भारत की संस्थाएँ और समूह और उनका योगदान।

इकाई 8 अभिनय और निर्देशन

(A)

अभिनय की विभिन्न शैलियां – पश्चिमी और पूर्वी

- आरंभिक काल- ग्रीक, रोम, एलेजाबेथियन, कमेडिया डेल आर्टे
- आधुनिक काल – रिप्रेजेंटेशनल, स्टनिस्ल्वस्की, मेयरहोल्ड, ब्रेच, ग्रोटोवस्की
- पूर्वी – संस्कृत, पेकिंग ओपेरा, नोह, काबुकी
- अभिनेता के प्रशिक्षण में मैम, कंठ, वाक्, आशु रचना और फिजिकल थिएटर की भूमिका।

(B)

- विभिन्न निर्देशात्मक नवप्रवर्तन और विधियां।
- थिएटर में निर्देशक की भूमिका।
- नाटक निर्देशन के मूलभूत सिद्धान्त : संतुलन, बल, रचना, चित्रांकन, गति, लय और छंद।
- प्रस्तुति की प्रक्रिया : स्क्रिप्ट से प्रदर्शन तक।

(C)

- प्रस्तुति के सिद्धांत
  1. यथार्थ वादी : ड्यूक ऑफ सेक्से की मिनिनजेन, स्टेनिसलवस्की, एलिया कज़ान, एन्टिओने
  2. गैर – यथार्थवादी : ब्रेच, मेयेर्थहोल्ड, पीटर ब्रूक, अगस्टो बोएल
- स्वतंत्रोत्तर भारतीय थिएटर आंदोलन पर उपर्युक्त सिद्धांतों का प्रभाव

इकाई 9 थिएटर डिजाइन और तकनीक

(A)

- थिएटर वास्तुकला : ग्रीक, रोमन, एलजेबेथियन, थ्रस्ट स्टेज, प्रोसीनियम, एरेना, खुला मंच।
- संस्कृत : विकृष्ट – मध्यम नाट्यगृह
- शास्त्रीय युग के चीनी, जापानी नाट्य गृह।

(B)

- मंच शिल्प : सेटों , प्रकाश, वेष-भूषा, मेकअप, ध्वनि, प्रोप्स, अन्य कलाओं के मूलभूत सिद्धांत और कार्य तथा विभिन्न प्रकार की नाट्य प्रस्तुति के रूप में थिएटर संगीत
- शास्त्रीय भारतीय, चीनी, जापानी और भारतीय पारंपरिक थिएटर में अहार्य और नेपथ्य विधि।

(C)

- थिएटर प्रबंधन और आयोजन।

(D)

- बाल थिएटर, अनुप्रयुक्त थिएटर, सामुदायिक थिएटर, शिक्षा में थिएटर, थिएटर ऑफ ओप्रेस्ड, और नारीवादी थिएटर।

इकाई 10 थिएटर शिक्षा, शिक्षा शास्त्र (पेडागाजी) और शोध

- थिएटर प्राथमिक शिक्षा और महाविद्यालय की प्रणाली के पाठ्यक्रम के रूप में।
- पारंपरिक थिएटर शिक्षण की प्रासंगिकता।
- पेशीगति विज्ञान (काइनस्थेटिक) आधारित गति विश्लेषण, योग, थिएटर गेम, मार्शल आर्ट, लोक, कठपुतली तथा अन्य रूप।
- सुप्रसिद्ध विद्वान और उनके कार्य, जिन्होंने भारतीय थिएटर के ज्ञान में योगदान दिया।
- भारतीय थिएटर शोध और भारत में विद्वता की प्रवृतियाँ।
- थिएटरों के पृष्ठ-पोषक – स्वतन्त्रता के पश्चात प्रमुख संस्थाएँ, संगठन, सरकारी, निगमित, निजी निकाय और थिएटर संबंधी व्यक्तित्व।
- महत्त्वपूर्ण थिएटर उत्सवों की जानकारी, थिएटरों, पुरस्कृत कलाकारों और थिएटर संबंधी वर्तमान घटनाओं की जानकारी।